

मैत्रावरुणर्वसिष्ठः।उषसः। त्रिष्टुप्।

उपो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै।

अभूदग्निः समिधे मानुषाणामकज्योतिर्बाधमाना तमांसि ॥ ७.०७७.०१

मानुषाणाम्- मनुष्याणाम्। समिधे- समिन्धनाय। अग्निः- पावकः सत्क्रतुः। अभूत्- अभवत्।
युवतिर्न योषा- तरुणी सुन्दरीव। उप रुरुचे- रोचते। विश्वम्- सर्वम्। जीवम्। चरायै- सञ्चाराय।
प्रसुवन्ती- प्रेरयन्ती। तमांसि- अन्धकारमयाज्ञानानि। बाधमाना- नाशयन्ती। ज्योतिः-
ज्ञानप्रकाशम्। अकः- अकरोत् ॥१॥

विश्वं प्रतीची सप्रथा उदस्थाद्दुशद्वासो बिभ्रती शुक्रमश्वैत्।

हिरण्यवर्णा सुदृशीकसंदृग्गवा माता नेत्र्यहामरोचि ॥ ७.०७७.०२

विश्वम्- सर्वस्य। प्रतीची- अभिमुखी। सप्रथाः- सर्वतः पृथुतरा। उदस्थात्- उदेति। रुशत्-
दीप्तम्। वासः- वस्त्रम्। बिभ्रती- धारयन्ती। शुक्रम्- शुभ्रम्। अश्वैत्- वर्धते। हिरण्यवर्णा-
सुवर्णकान्तिः। सुदृशीकसंदृक्- सुदर्शनीया। गवाम्- धेनूनां चिद्रश्मीनाम्। माता। अह्वाम्-
दिनानां दैवप्रज्ञानाम्। नेत्री। अरोचि- रोचते ॥२॥

देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती श्वेतं नयन्ती सुदृशीकमश्वम्।

उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभूता ॥ ७.०७७.०३

देवानाम्। चक्षुः। सुभगा- सौभाग्यवती। श्वेतम्- शुभ्रम्। सुदृशीकम्- सुदर्शनम्। अश्वम्-
व्याप्तमात्मसूर्यम्। वहन्ती- प्रापयन्ती। उषाः- ज्ञानोदयदेवता। रश्मिः- चित्किरणैः। व्यक्ता।
अदर्शि- दृश्यते। चित्रामघा- चित्रसम्पद्धती। विश्वम्- सर्वं जगत्। अनु- अनुसृत्य। प्रभूता-
प्रवृद्धा ॥३॥

अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छोर्वी गव्यूतिमभयं कृधी नः।

यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधौ गृणते मघोनि ॥ ७.०७७.०४

अन्तिवामा- अस्मन्निकटकल्याणी त्वम्। अमित्रम्- अस्मच्छत्रुम्। दूरे कृत्वा। उच्छ- विभाहि।

उर्वी- विस्तृताम्। गव्यूतिम्- चिद्रश्मिसम्पदम्। अभयम्। नः- अस्मभ्यम्। कृधि- कुरु।

उषाः- ज्ञानोदयदेवता। रश्मिभिः- चित्किरणैः। व्यक्ता। अदर्शि- दृश्यते। चित्रामघा-

विचित्रसम्पद्वती। विश्वम्- सर्वं जगत्। अनु। प्रभूता- उद्भूता ॥४॥

अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्वि भाह्युषौ देवि प्रतिरन्ती न आयुः।

इषं च नो दधती विश्ववारे गोमदश्चावद्रथवच्च राधः ॥ ७.०७७.०५

उषो देवि- ज्ञानोदयदेवते। श्रेष्ठेभिः- उत्तमैः। भानुभिः- रश्मिभिः। वि- विशेषेण। भाहि-

प्रकाशय। नः- अस्माकम्। आयुः- जीवनम्। प्रतिरन्ती- वर्धयन्ती। विश्ववारे- सर्वैर्वरणीये। नः-

अस्मभ्यम्। इषम्- मनीषाम्। च। दधती- धारयन्ती। गोमत्- चिद्रश्मियुक्ताम्। अश्ववत्-

प्राणाश्वयुक्ताम्। रथवत्- सद्रंहणयुक्ताम्। राधः- संसिद्धिं यच्छति ॥५॥

यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः।

सास्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७.०७७.०६

दिवो दुहितः- चिदाकाशजे। उषः- ज्ञानोदयदेवते। सुजाते- सुष्ठु प्रादुभूते। याम्। त्वा- त्वाम्।

वसिष्ठाः- अतिशयेन चित्तवृत्तिस्तम्भकरा ऋषयः। मतिभिः- मननैः। वर्धयन्ति। सा। अस्मासु।

ऋष्वम्- दीप्तम्। बृहन्तम्- महत्। रयिम्- दानयोग्यधनम्। धाः- यच्छ। यूयं पात स्वस्तिभिः

सदा नः ॥६॥